रिकार्डः– यह वादा करे.... रविवार प्रातः ॐ पिताश्री 6/1/62

बच्चों को निराकार सद्गुरु बाबा समझाते हैं। ऐसे तो यहाँ बहुत कहते हैं गुरु बाबा; परन्तु गुरु और बाबा तो सिवाय **P॰ P॰ P॰** के और किसी को बोल नहीं सकते। गुरु तो है सद्गति करने वाला। और बाबा जिसने जन्म दिया है। आजकल के कलियुगी गुरु को बाबा नहीं कह सकते; क्योंकि वो जन्म तो नहीं देते। तो गुरु, बाबा वा साँई कहना गलत हो जाता है। गुरु को ही बाबा, साई भी कहते हैं। तो यह भी झूठ बोलते हैं। तो उनको समझाना चाहिए तुम्हारा वो बाबा तो है नहीं। रूहानी बाबा को रूहानी (सद्गुरु) को कोई नहीं जानते। अब शिवबाबा खुद बैठ समझाते हैं मैं तुम्हारा बाबा ..... हम आत्माओं का वो बाप है इसलिए तुम कह सकते हो सद्गुरु बाबा। यह भी उनको कहेंगे। वो हमारा बाप, शिक्षक, गुरु है। और कोई को भल गुरु, बाबा कहे; परन्तु शिक्षक नहीं कहेंगे। टीचर हिस्ट्री–जाग्राफी सिखाते हैं। सच्ची हिस्ट्री–जाग्राफी तो कोई जानते नहीं। वो सब सुनाते हैं हद की। यह है बेहद की हिस्ट्री–जाग्राफी। तो वो बेहद का बाप बच्चों को कहते हैं मन्मनाभव अर्थात् मेरे को याद करो। मद्याजीभव माना विष्णु पुरी को याद करो। इसलिए निश्चय पत्र भी लिखाया है बरोबर शिवबाबा बाप, टीचर, सद्गुरु है। बरोबर वो बेहद का बाबा है ही हम आत्माओं का बाप। शिवोऽम कहने से फादरहुड हो जाता। हम तो सब भाई2 हैं। एक बाप के बच्चे हैं। फिर अलग2 धर्म में आने से क्रिश्चयन का भाई। बहन अलग हो गए। यह है शुद्ध संबंध। भाई–बहन क्रिमिनल एसॉल्ट कर न सके। क्रिमिनल ..... बहन ठहरे। तो अब सम्पूर्ण चंद्रमा बनने लिए पूरा योग लगाना है; क्योंकि आत्मा पर ग्रहण लगने से बिल्कुल क..... गई है। ग्रहण जब लगता है तो पहले थोड़ा फिर आहिस्ता2 बढ़ता जाता है। तो अब हमारी आत्मा में थोड़ी लाइट जाकर रही है। जैसे चंद्रमा की कन्नी जाकर रहती है ना। प्रायः कन्नी जाकर रही है। सारा दीवा बुझ नहीं गया है। जैसे घृत का दीवा जलाते हैं तो बहुत संभाल रखते हैं कि कहाँ बुझ न जाये। पिछाड़ी में थोड़ी चुग ...ये बचती है तो बाबा समझाते हैं तुम पर भी माया का ग्रहण लगते–2 अब काली पड़ गई हो, थोड़ी कन्नी आकर रही है। फिर बाबा आये ज्योत जगाते हैं। एक ..... ज्योत बुझ नहीं जाती। फिर से माचिस की तीली जलाने की .....। थोड़ी कन्नी अब आये बचती है तब फिर बाबा आये ज्योत जगाते हैं। ..... में ज्योत जग जावेगी। यह है सच्ची2 दीपमाला। सतयुग में सदैव दीपमाला ही है। वहाँ है घोर सोझरा। यहाँ है घोर अंधियारा। ज्ञान से सोझरा, भक्ति से अंधियारा होता है। इस समय भक्ति का बहुत प्रस्ताव है। ज्ञान है ही नहीं। इसको कहते हैं तमोप्रधान भक्ति, तमोप्रधान अंधियारा। फिर सतोप्रधान भक्ति, सतयुग होगा। बाप आये बच्चों को मंत्र देते हैं कि मैं तुम्हारा सच्चा बाप, टीचर, सद्गुरु हूँ। तुमको माया पर जीत पाने का वशीकरण मंत्र देता हूँ। ..... मिलते हैं, जिससे तुम माया पर जीत पा सकेंगे। माया भी सर्वशक्तिवान है। आधा कल्प रावण राज्य है। सब माया की ज़ंजीर में जकड़े हुए हैं। सब झूठ बोलते रहते। जितना बड़ा महात्मा उतनी बड़ी लम्बी झूठ बोलते।

अपन को शिवोहम अथवा p॰ कहना यह है बड़ी ते बड़ी झूठ। तुमको इन गुरुओं ने झूठ सिखलाकर मुझसे विमुख कर दिया है। जिस कारण दुःखी बने हो। अब महान सुखी बनना है। तो बेहद बाप के बच्चे बनो। बेहद की शिक्षा लो। देखो, यह तुम्हारा (त्रिमूर्ति चित्र की तरफ इशारा) फ्लैग है। उस गवर्नमेन्ट की भी निशानी त्रिमूर्ति और चक्र है। उन्हों ने तीन जनावर बनाये उनके नीचे लिखा है सत्यमेव जयते। अब वास्तव में है त्रिमूर्ति शिव। उन्होंने त्रिमूर्ति ब्रह्मा लिख दिया है। त्रिमूर्ति शिव है तीन देवताओं को रचने वाला। चक्र भी यह है। बात ठीक है; परन्तु जानते नहीं हैं। तुम ब्राह्मणों का यह सच्चा2 फ्लैग है। यह तुमको लगाना चाहिए। पाण्डव गवर्नमेन्ट का फ्लैग। तुम डरो मत, कोई कुछ कह नहीं सकते। यह जो दिखलाते हैं जुए में द्रौपदी को हराया आदि। यह सब हैं नॉनसेन्स बातें। जुआ कैसे हो सकता। ऐसी2 गन्दी बातें सुनने से बहुत जुआ करते हैं। फिर स्त्री को भी उसमें लगाते हैं, तुमने जीता तो एक रात के लिए स्त्री दे देंगे। यह जुआ आदि कहाँ से सीखे? चौपड़ डारी से। इस पर एक दृष्टांत देते है राँड की आदत ऐसी होती है। राँड पर कोई ने आये, बोला अच्छा डॉक्टर को बुलाओ मैं आता हूँ फिर आया डॉक्टर आया है वो मरता है बोला अच्छा तुम चलो आता हूँ..... यह होती है चूस। जैसे रेस की हेर पड़ती है। तो खाना भी खराब कर देती। तो यह सब गन्दगी कहाँ से निकली? द्रौपदी को पाँच पति दे दिए हैं। यह सब गन्दगी शास्त्रों से निकली है। (निज़ाम का मिसाल) कितने बड़े2 टाइटिल रखवाते हैं। यह सब झूठ। झूठा धंधा लगा बैठे हैं। पाँव भी पड़ो, पैसा भी भरो, दुर्गति को भी पाओ। इसलिए बाप अब खबरदार करते हैं कि इन झूठे गुरुओं ने तुमको डुबो दिया है। अब मौत आया कि आया। तुम घोर अंधियारे में पड़े हो। अब बाबा ने हमको जगाया है। वो नई दुनिया के लिए हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। श्री कृष्ण पुरी स्थापन हो रही है। कंस पुरी का विनाश होना है। बाबा कहते हैं तुम्हारा यह जन्म दुर्लभ है। मनुष्य जन्म तो सबको है; परन्तु कोई विरले आकर नर से ना॰ बनते हैं। कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं। गाया भी जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक। इस समय भारतवासी बहुत दुःखी, दुर्भाग्यशाली हैं। ऐसे नहीं कि मोटर गाड़ी बहुत हैं तो सुखी हैं। सब मातृ द्रोही, पितृ द्रोही हैं। लड़ते रहते हैं। क्रिश्चियन धर्म का कितना द्रोह है। बाबा कहते उन्हों का भी कोई दोष नहीं। शंकर द्वारा प्रेरणा कर इस पुरानी दुनिया का विनाश कराना ही है। त्रिमूर्ति शिव तीनों को रचने वाला बड़ा हो गया। तीनों को रचने वाला कृष्ण तो नहीं है। मूर्ख लोग कुछ भी नहीं समझते हैं। राजयोग सिखाने वाला एक ही शिवबाबा है और सब हैं हठयोगी तमोप्रधान। यह भी ड्रामा में नूँध है। हरेक का धर्म अपना है। जो देवी–देवता धर्म वाले कन्वर्ट हो गए होंगे वो निकलते आवेंगे। अब शिवबाबा कहते हैं बच्चे मन्मनाभव। मैं तुम सबको लेने आया हूँ। पण्डा बनकर आया हूँ सबको ले जाने। मैं जाऊँगा तो पहले–2 ब्र०वि०शं० आवेंगे फिर नम्बरवार सभी आत्माएँ आवेंगी। हे मेरी सजनियाँ! मैं साजन तुमको बुलाने आया हूँ घर बैठे। तुम बैठ सन्मुख सुनती हो। सतयुग की स्थापना का पार्ट फिर से रिपीट हो रहा है। जब राजधानी पूरी स्थापन

हो जावेगी। तब टोटल विनाश होगा। तब ..... जगाने लिए यह उपद्रव आदि होंगे। मनुष्य देखेंगे कैसे हाल होता है। धन पदार्थ सब भस्म हो जावेगा। किसी की दबी रही धूल में––– सफल उनकी होगी जो अपनी मिल्कियत को ट्रांसफर कर देंगे। बाबा के मददगार बनेंगे। बाबा कहते तुम एक बार बलिहार जाओ तो मैं 21 बार बलिहार जाऊँगा। यह बाबा भी उस पर बलिहार गया ना। गीता का भगवान था शिवबाबा। उनका बच्चा फिर ब्रह्मा। रथ बच्चे का लेते हैं। इनका नाम ब्रह्मा रख देते हैं। यह पतित है वो पावन ब्रह्मा है। यह पावन होता जाता है। बी.के. भी ..... होती जाती है, ताकि सूक्ष्मवतन में फरिश्ते जाकर बनेंगे। फिर भविष्य में मनुष्य से देवता बन जावेंगे। उस देवता पुरी का भी बाबा सा॰ करा देते हैं। अभी यह सारी दुनिया बेसमझ है। बेसमझ दीवाला ही निकालते हैं। बाबा कहते हैं मेरे द्वारा तुम सबकुछ जान जावेंगे। जो मैं जानता हूँ वो तुमको समझाता हूँ। इस एक ही समय में बाप, टीचर, सद्गुरु तीनों ही बनते हैं। एक ही बार यह कार्य करते हैं। बाबा कहते हैं पहले मेरी गोद में आओ तो वर्सा मिलता जावेगा। हिम्मते मरदा मददे खुदा; परन्तु कोई विरला ही बलि चढ़ते हैं। कहते हैं बाबा मैं आपका हूँ। आपकी ही मत पर चलूँगा। श्रीमत पर चलने से हम देवी–देवता बन जाते हैं। कहते हैं मैं हूँ अविनाशी ज्ञान सर्जन। मेरे बिगर कोई यह बीमारी मिटा न सके। मैं सद्गुरु तुमको श्रेष्ठ मत देता हूँ। बाकी कलियुगी गुरु उल्टी मत दे और ही गिरा देते। शिवबाबा का हाथ पूरा पकड़ो और उन गुरुओं का भी उद्धार करो। माताओं की बहुत निन्दा की है। तुम ही निमित्त बनती हो। गुरु बन शिक्षा दे..... ..... था उसने राजयोग सिखाया था और ..... थी और फिर सतयुग भी स्थापन हुआ था। फिर भी यह मैटीरियल बन रच रहे हैं। जिनसे कुछ भी नहीं होगा। सतयुग में कोई यज्ञ आदि होते नहीं। वहाँ कोई उपद्रव ही नहीं होता ..... यज्ञ किसके लिए रचेंगे ..... पीस .... लिए यज्ञ रचते हैं। अब पीस तो **P.** ही लावेगा न कि यह नेहरू ..... प्राइज़ तो तुम को मिलती है। वैकुण्ठ .... मालिकपना। कितनी बड़ी प्राइज़ .....। बाबा ने वैकुण्ठ का खजाना ..... है। ऐसे बाबा को कितना याद करना चाहिए। श्वासों श्वास याद करो तो कलह कलेश सब मिट जावेंगे और ..... जीवनमुक्त पद पाओगे। तो इस समय सारा ..... राज्य करते हैं तो यह फ्लैग नहीं रहता वहाँ ज....। ल॰ना॰ तख्त पर बैठना है। राइट में ल० लैफ्ट में, ना० बैठते हैं। फिर पिछाड़ी में विष्णु चतुर्भुज का चित्र हीरों–जवाहरों से सजा हुआ रहता है। इनके दो रूप राज्य करते हैं। वो जड़ चित्र बना रहता है समझते हम विष्णु कुल के हैं। वहाँ के तो फर्स्ट क्लास महला होंगे। बड़ी दरबार होती है। तो तुमको इतना पुरुषार्थ करना है। अभी तो अपने वैकुण्ठ के लार्ड सामने दिखाई पड़ते हैं। ....रा वैकुण्ठ सामने खड़ा है। बस, यह शरीर छोड़ा और अपने महल में जा बैठेंगे। सच्चे बच्चे जो हैं उनको सामने दिखाई पड़ेगा। तो बाबा ने कहा कौन पढ़ाते हैं यह लिखकर दो।

निश्चय नहीं तो बाकी क्या पढ़ते होंगे। एक कान से सुन दूसरे से निकाल देते होंगे। निश्चय बिगर बैठने वाले की लिखो वाइब्रेशन हो जाती है। बुद्धि भटकती .....। हम अभी राजयोग के लिए तपस्या कर रहे हैं। राजयोग का भी अर्थ कोई नहीं समझते। ..... ये कहते हैं यह भी धन पिछाड़ी पड़ते हैं। अरे, धन से ही तो मनुष्य सुखी बनता है। माया अलग चीज है। हमारे और सन्यासियों के ज्ञान में बहुत फर्क है। हम पवित्र बन महा सुखी बनेंगे। यह सहज योग राजयोग सीखने से हम हीरे जैसा बन जावेंगे। मौत सामने खड़ा है। बाबा कहते हैं सबकुछ नई दुनिया को ट्रांसफर कर देगा। हम कोई से लेते नहीं हैं। हम जिस ..... जावेंगे। इतना ही फिर वहाँ देंगे। काम में ही न लाया तो देंगे क्यों। जन.....; परन्तु देरी से आया तो चंद्रवंशी में चला गया। योग तो पूरा लगाया नहीं। ..... सर पर होगा तो फिर सूर्यवंशी में कैसे देंगे। देरी से आये तो सूर्यवंशी राजधानी गँवा दी। अच्छा देखो इनकी आत्मा भी उनसे सुनती है, उनसे योग लागती है। यह है योगअग्नि। सच्ची पतिव्रता बनना है। उस पतिलोक में जाना है। सती जब बनती है तो हार श्रृंगार कर चिक्षा पर बैठती है। तुमको ज्ञान का हार श्रृंगार करना है। तो तुम मेरे लोक में आवेंगे और फिर तुमको महारानी बना दूँगा। कितना सहज समझाते हैं कोई जट भी समझ जाये। पत्थर बुद्धि अहिल्याएँ समझ जाती हैं। पैसे वाले अकलमंद समझते नहीं। शिव की मत और ब्रह्मा की मत मशहूर है। दोनों हैं बाप बेटे। तुमको दोनों की मत मिलती है। तो भी सुधरते नहीं हो। पारलौकिक पति ज्ञानामृत पिलाते उनको राजी नहीं करते यानी अमृत नहीं पीती और विष पिलाने वाले पति को ..... राज़ी करती हो। (रिकार्डः– यह वादा करो) बाबा कहते हैं तुम भी वादा करो हम भी वादा करते। .....हमारे बन जाओ तो हम 21 जन्म लिए तुमको सदा सुखी बना देंगे। फिर हम तो वानप्रस्थ में चले जावेंगे जैसे आगे जमाने में बाप बच्चों को राजभाग दे सुखी बनाये खुद वानप्रस्थ में चले जाते थे। मैं भी तुम बच्चों को बेहद का सुख दे निर्वाणधाम में बैठ जाता हूँ। भारतवासियों को शिवबाबा कहते हैं मैं कल्प2 आये दुःखधाम को सुखधाम बनाता हूँ। इसलिए ही फिर भक्तिमार्ग में मुझे याद करते हैं। बाकी मैं कोई सर्वव्यापी नहीं हूँ। कुछ भी पूछना हो तो बाबा से पूछ सकते हो। यह है शिवबाबा का मुरब्बी बच्चा। वो है श्रीमत। यह है ब्रह्मा की मत। श्री कृष्ण को नहीं कहेंगे। श्री कृष्ण ही चक्कर लगाये ब्रह्मा बना है। वो ही ब्रह्मा जो स्थापना करते हैं सो फिर श्री कृष्ण बन पालना करते हैं। अच्छा। बापदादा सभी गोपों को निमंत्रण देते हैं कल बापदादा ..... आगे सभी भोजन पावें। बाबा बहलेंगे भी, प्रश्न भी पछेंगे। हरेक से पूछेंगे। माताओं का फिर सुपर दिन प्रोग्राम रखेंगे। अच्छा ॐ

डायरैक्शन

छोटे पत्ते कृष्ण वाले जो नये बाबा ने यहाँ छपाये हैं वो आपको पार्सल भेजे गए हैं। आपको प्लास्टिक की थैलियों का भी थोड़ा सैम्पल्स भेज रहे हैं। बापदादा की प्रेरणा है कि यह पत्ते एक2 प्लास्टिक थैली में डालकर डिसैन्ट करके देना है। ऐसी थैलियों के लिए आप वहाँ पूछताछ करना। अगर न मिल सके तो बम्बई से मंगा सकते हो। प्यारे बापदादा की प्रेरणा कि बड़े चार पेज वाले त्रिमूर्ति झाड़ वाले ''15×20'' साइज़ वाले भी प्लास्टिक की थैलियों में अच्छे2 लोगों को देना है। वो थैलियाँ भी वहाँ ढूँढना। अगर न मिले तो बम्बई से मंगा सकते हैं। बड़ी थैलियों का दाम ''15×20'' रु.50/– एक हज़ार ..... और ..... थैलियों का दाम ''6×9'' रु.10/– एक हज़ार का यहाँ होलसेल का है। आप अपनी तरफ पूछताछ कर समाचार देना जी। ॐ